ShodhVarta
An International Peer-Reviewed Journal
www.shodhvarta.in
Vol 02 Issue 02

The Profound Beauty of Love in the Poetry of Rishabh Dev Sharma: A Study

Received: 08 Feb 2023
Reviewed: 09 Mar 2023
Accepted: 18 Apr 2023
Published: 30 Apr 2023
Paper ID: 230404

Dr Hariram Bhargava
Hindi Teacher
Government Co-Educational School
Directorate of Education NCT of Delhi
Email: bhargaohari22@gmail.com

Abstract

The study focuses on exploring the profound beauty of love as depicted in the poetry of Rishabh Dev Sharma. Over a period of around forty years, Dr. Sharma has made a significant contribution to promoting Hindi in South India while fostering harmony and equality between Telugu and Hindi. His dedicated service has resulted in the nurturing of Hindi as a new sapling and has guided more than 142 students in their research, leading to the creation of over a hundred books in original and edited writing, leaving a lasting impact. Dr. Rishabh Dev Sharma's literary works are vast and diverse. He has authored numerous poetry collections, with "Prem Bana Rahe" being one of them. In this particular collection, he explores the essence of love, transcending mere physical and mundane aspects, and delves into the realm of divine and profound love.

Keywords – Southern Hindi, Promotion, Development, Telugu, Equality, Co-ordination, Supernatural love.

ऋषभ देव शर्मा के काव्य में प्रेम का अदीप्त सौन्दर्य : एक अध्ययन

सारांश (Abstract)

डॉ. ऋषभ देव शर्मा ने दक्षिण में हिंदी संवर्धन और विकास में तेलुगु और हिंदी समता समन्वयता के तरु का रोपण करते हुए लगभग चालीस साल की दीर्घ सेवा में दक्षिण भारत में हिंदी की नवीन पौध तैयार की है, जिसमें उन्होंने 142 छात्रों को शोध में निपुण बनाते हुए मौलिक और सम्पादित लेखन में एक सौ से अधिक ग्रंथों का निर्माण कर अविस्मरणीय योगदान दिया है। कवि डॉ. ऋषभ देव शर्मा का साहित्य संसार विस्तृत व विशाल है। उन्होंने लगभग चालीस साल की हिंदी सेवा में अनेक काव्य ग्रंथ लिखे; उनके द्वारा रचित 'प्रेम बना रहे' काव्य संग्रह प्रेम सौन्दर्य को लौकिकता या मांसलता से परे अलौकिक प्रेम को लिखा है। डॉ. शर्मा जी के काव्य संग्रह 'प्रेम बना रहे' का तेलुगु भाषा में दो अलग – अलग तेलुगु साहित्यकारों द्वारा अनुवाद किया गया। इस आलेख में 'प्रेम बना रहे' काव्य संग्रह में चयनित अप्रितम प्रेममयी सौन्दर्य परक कविताओं का अध्ययन किया जा रहा है।

बीज शब्द (Keywords)

दक्षिणी हिंदी, संवर्धन, विकास, तेलुगु, समता, समन्वयता, अलौकिक प्रेम।

प्रस्तावना (Introduction)

डॉ. ऋषभ देव शर्मा की दक्षिण भारत में हिंदी सेवा में अविस्मरणीय योगदान के साथ हिंदी के वटवृक्ष के रूप में विद्यमान स्थापित है। ऋषि देव शर्मा उत्तर भारत (हिंदी क्षेत्र) से थे और इन्होंने अपनी हिंदी सेवा का शुभारंभ मौलाना आजाद उर्दू राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, हैदराबाद और दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास से हिंदी की सेवा प्रारम्भ की। इन्होंने अपने जीवन काल में 142 शोधार्थी देश को प्रदान करते हुए हिंदी

साहित्य और शिक्षा में एक अनूठी मिसाल प्रस्तुत की। डॉ. ऋषभ देव शर्मा द्वारा अनेक काव्य संग्रह लिखे गये। जिनके नामोंल्लेख निम्नलिखित है; तेवरी (1982), तरकश (1996), ताकि सनद रहे (2002), देहरी- स्त्री पक्षीय कविताएं (2011), प्रेम बना रहे (2012), सूं सां माणस गंध (2013), धूप में कविता लिखी है (2014) इसके साथ- साथ इनके द्वारा रचित 'प्रेम बना रहे' हिंदी काव्य संग्रह का 2013 में तेलुगू भाषा में दो अनुवाद ग्रंथ अनुवादित किये गये। इस ग्रंथ का क्रमशः पहला अनुवाद ग्रंथ "प्रेमा इला सागिपोनी" शीर्षक से डॉ. जी. परमेश्वर ने और दूसरा अनुवाद ग्रंथ "प्रिये चारुशीले" शीर्षक से डॉ. भागवतुल हेमलता ने किया।

ऋषभ देव शर्मा के काव्य में प्रेम का अदीप्त सौन्दर्य का उद्देश्य प्रेम की अद्भुतता और उसके सौंदर्य को काव्यरूप में प्रस्तुत करना है। कवि ऋषभ देव शर्मा द्वारा रचित काव्य संग्रह "प्रेम बना रहे" में उन्होंने प्रेम के विभिन्न रूपों और भावों को सुन्दरता से वर्णन किया है। इसमें प्रेम की ऊष्मा, उत्साह, आकर्षण, विचार, आनंद, उदासी, आशाओं के भाव, आत्म-समर्पण और भक्ति के अनुभव आदि को शानदार शब्दों में बढ़ावा दिया गया है।

इस काव्य संग्रह के उद्देश्य में एक प्रमुख अंश है काव्य के माध्यम से प्रेम की उच्चता, आत्मीयता, और अद्भुत सौंदर्य को उजागर करना। कवि ऋषभ देव शर्मा के काव्य में प्रेम एक अलौकिक वातावरण में प्रस्तुत किया गया है जो काव्यप्रेमियों को भावांगने और प्रेम के अनन्त रंगों के साथ संवाद करने का अवसर प्रदान करता है।

इस प्रकार, 'प्रेम बना रहे' काव्य संग्रह का उद्देश्य प्रेम के अद्भुत सौंदर्य को साहित्यिक रूप में प्रकट करना है और पाठकों के हृदय में प्रेम के निरंतर उत्साह को जागृत करना है। इससे पाठकों की भावनाएं प्रशांत होती हैं, उनका भाव निश्चल होता है, और उन्हें आनंद का अनुभव होता है। इससे उनका जीवन उज्ज्वल और प्रेम से परिपूर्ण हो जाता है।

पृष्ठभूमि (Background)

ऋषभ देव शर्मा के लेखन में प्रेम का विशेष महत्व है और वे प्रेम के विभिन्न पहलुओं को साहित्य में प्रस्तुत करने में कामयाब हुए हैं। प्रेम की अद्भुतता और उसके सौंदर्य को काव्यरूप में प्रकट करने के लिए उन्होंने अपने काव्य में विभिन्न रस, छंद, और चित्रण के साथ प्रेम की भावांगना की है। उनके काव्य में प्रेम एक आध्यात्मिक उच्चता का प्रतीक है, जो सामान्य भौतिक प्रेम से परे है। उनके काव्य में प्रेम को भगवान के साथ दिव्य संबंध के रूप में भी व्यक्त किया गया है। वे प्रेम को विचारों और भावनाओं का विषय बनाने में सफल रहे हैं और उनके काव्य में प्रेम के समृद्ध भावों को सुन्दरता से दर्शाने में कामयाब हुए हैं। ऋषभ देव शर्मा के काव्य में प्रेम का अदीप्त सौन्दर्य उनके अलौकिक शैली, भाषा के उदात्तता, और रस-छंद के बारे में भी स्पष्ट होता है। उनकी कविताएं प्रेम के सभी आयामों को समावेश करती हैं, जैसे कि उत्साह, आकर्षण, उदासी, आनंद, भक्ति, और समर्पण। इन सभी भावों को वे भावांगने की कला के माध्यम से पाठकों के मन में जगाते हैं और उन्हें प्रेम के रंगों में रंगते हैं।

अतः कहा जा सकता है कि ऋषभ देव शर्मा के काव्य में प्रेम का अदीप्त सौन्दर्य उनके काव्य शृंगार के लिए एक महत्वपूर्ण साधना है और उन्हें एक अद्भुत और उदार दर्शन के साथ प्रस्तुत करने में सफलता मिली है। उनके काव्य में प्रेम के सौंदर्य का अद्भुत वर्णन उनके साहित्यिक योगदान की महत्वपूर्ण विशेषता है।

विश्लेषण (Analysis)

डॉ. ऋषभ देव शर्मा 1990 से निरंतर दक्षिण भारत में हिंदी सेवा देते हुए दक्षिण भारत में हिंदी प्रचार- प्रसार में सदैव सक्रिय रहे हैं। आप ने अनेक आलोचनात्मक ग्रंथ भी लिखें, जिसमें तेलुगु साहित्य का हिंदी अनुवाद परंपरा और प्रदेय (2013), तेलुगु साहित्य का हिंदी पाठ (2013), हिंदी भाषा के बढ़ते कदम (2015) उक्त ग्रंथ तेलुगु हिंदी साहित्य से संबंधित है। यह हिंदी साहित्य और दक्षिण भारत में हिंदी संवर्धन में अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं। इस आलेख में "प्रेम बना रहे" काव्य संग्रह की कविताओं का अनुशीलन किया जा रहा है।

डॉ ऋषभ देव शर्मा द्वारा रचित काव्य संकलन "प्रेम बना रहे" प्रेम की तन्मयता और अप्रीतम सौंदर्य को साक्षी रखता है। इस संग्रह में 60 के आसपास प्रेमपरक कविताओं का संग्रह है। एक- एक कविता प्रेम सौंदर्य की अनुभूति में प्रेमी और प्रेमिका को जल में जल विलयन की अनुभूति दर्शाती है। कवि शर्मा जी की प्रेम पर कविताओं से स्पष्ट है कि इनकी कविताएं आधुनिक काल की दृष्टि से स्वच्छंद और शास्त्रीय प्रबंधों से मुक्त व अतुकांत रूप में लिखित है; फिर भी प्रेमपास के बंधन में एक-एक कड़ी इस प्रकार बंधी हुई है कि पाठक का हृदय आत्मभोर हो जाता है। कवि 'संगम' कविता में प्रेम की अनुभूति गंगा और यमुना की जलधारा के मिलन के रूप में करते हैं। जहाँ पानी से पानी मिलकर केवल पानी का ही अस्तित्व रहता है। इसी के

आधार पर कवि प्रेम को सात्विक- अलौकिक अप्रीतम सौंदर्य का स्वरूप लिखते हैं।

"अब हम, धारा नहीं रहे थे, समुद्र
पानी ही पानी, नाम गौत्र से हीन नी-
न घट न तट, बस पानी ही पानी
नदी है नदी है बस पानी ही पानी
न तुम न मैं, पानी ही पानी।"

(शर्मा, 9-10)

कवि 'स्पर्श' कविता में मांसल स्पर्श के भाव या त्वचा को छूकर अनुभूति करने को प्रेम नहीं कहता बल्कि अंतर्मन को छूकर प्रेम की अनुभूति को महसूस करता है, उसे ही सच्चा प्रेम कहा है।

"तुम्हारी केवल त्वचा छूता रहा
तुम्हें एक बार भी नहीं छू सका।"

(शर्मा, 17)

इसी प्रकार 'अवाक्' कविता में प्रेममयी दृश्य में आत्मभोर को कवि जब अपनी प्रेमिका को देखता है, तो उसके अदिप्त सौन्दर्य में प्रेम की अनुभूति को महसूस करता हुआ कहता है।

"चित्र में तुम दिखते हो,
कभी चित्र तुममें दिखता है।"

(शर्मा, 18)

कवि 'प्रमाद' कविता में प्रियतम का इंतजार और प्रिय मिलन की उत्कंठा को मानसिक संचारी भावों के वेग रंजित भावों की तल्लीनता के प्रेमी- प्रेमिका मिलन लिखता है। कवि इस मिलन के अद्भुत सौंदर्य में प्रेम हृदय की शून्यता को लिखते हुए कहता है कि प्रेम मांसल और स्पर्श से परे अंत:करण हो गया है अर्थात् लौकिक से अलौकिक दृश्य की अनुभूति है।

"मैंने, गाए मंगलचार, पूरा चौक सजाई रंगोली
बिछाया पुतली का पलंग और रिझाया तुम्हें,
आंसुओं से धोए, कांटों से छिदे तुम्हारे पगतल;
और धन्यता से भर गई, मेरी समग्र शून्यता।"

(शर्मा, 21)

कवि दाम्पत्य जीवन के सुख- दु:ख के क्षणों में प्रेम, तिरस्कार, वाद- विवाद, संवाद इत्यादि में प्रेम को स्वच्छंद और उन्मुक्त रखने के लिए अपराध मुक्त करता हुआ क्षमा याचना करता है। कवि क्षमा याचना में प्रेयसी को धरती और आकाश से तुलना करता हुआ प्रकृति के कण- कण में विद्यमता दर्शाता है अर्थात् कवि 'साल दर साल' कविता में अपनी प्रेमिका को धरती, आकाश, जल, वायु, अग्नि सर्वस्व प्रकृति के सौंदर्य से अभिनीत करता है।

"क्षमा मांग लूं तुमसे,
तुम जो धरती हो, तुम जो आकाश हो
तुम जो जल हो, वायु हो,
तुम जो अग्नि हो, प्राण हो प्रेम हो।
मैंने तुम्हें बहुत सताया, बहुत बहुत सताया।
मेरे अपराधों को क्षमा करना।"

(शर्मा, 24)

कवि का प्रेम अर्थात् कवि अपनी प्रेयसी से किसी भी पल निराशा के भाव देखना नहीं चाहता वह हमेशा उसकी हँसी- खुशी के सान्निध्य में जीना चाहता है। इसलिए अनायास में दांपत्य सुख और मिलन में हुई नोक झोंक पर भी कवि क्षमा याचना करते हुए स्त्री जाति को सम्मान देकर कवि का कद ओर अधिक ऊंचा हो जाता है।

'गोपीका मैं' कविता में प्रेयसी को जब प्रियतम के आने की भनक लगती है तो वह उस समय गोबर थाप रही है, वह प्रियतम के आवागमन पर इतनी तल्लीन है कि अपने गोबर से सने हाथ लिए- लिए ही प्रियतम के राह में खड़ी होकर प्रियतम के आने का इंतजार करती है।

"धूल चाटती आंचल की परवाह किए बिना,
गोबर में सने हाथ लिए, बीच राह में,
आ खड़ी होती है, बिटौड़े पर काग के बोलते ही।"

(शर्मा, 42)

दूसरी ओर कवि 'क्या है' कविता में हवा से, फूल से, बिजली से, मौसम से, इंद्रधनुष से, तश्तरी से, स्वयं की गोद से और अपने शरीर के मांस के टुकड़े से बार- बार पूछता है तो उन्हें एक ही उत्तर मिलता है "प्यार" अर्थात् कवि अपनी प्रेयसी के अंतर्मन में इतना रंगा हुआ है कि उसे हर कहीं प्रेम ही प्रेम नजर आता है। इस प्रकार कवि प्रेम अंतर्मन की अनुभूति से अनुरत है और कवि का स्वच्छंद व उन्मुक्त प्रेम लौकिकता से परे अलौकिक साधना और भक्ति की अभिव्यक्ति है।

निष्कर्ष (Conclusion) -

कवि डॉ. ऋषभ देव शर्मा का साहित्य संसार विस्तृत व विशाल है। उन्होंने लगभग चालीस साल की हिंदी सेवा में अनेक काव्य ग्रंथ लिखे; उनके द्वारा रचित 'प्रेम बना रहे' काव्य संग्रह प्रेम सौन्दर्य को लौकिकता या मांसलता से परे अलौकिक प्रेम को लिखा है। जिसमें कवि का प्रेम कहीं पानी है, कहीं

बिजली है, कहीं हवा है, तो कहीं इंद्रधनुष और आसमान भी है। कवि प्रकृति के कण- कण में प्रेम के दर्शन करते हुए आज कल के जन मानस में लोलुपता लालच और प्रेमपाश को चुनौती देते हुए प्रेम को निश्चल व अधिक उजला कर दिया है। कवि हेतराम भार्गव "हिंदी जुड़वां" के अनुसार "कवि ऋषभ देव शर्मा का प्रेम घनानंद की उष्णता को छूकर आया है अर्थात् कवि कहीं ना कहीं घनानंद के अदीप्त सौन्दर्य में रंगे हुए हैं।" अतः स्पष्ट है कि "प्रेम बना रहे" काव्य संग्रह संयोग श्रृंगार रस की विस्मृत अनुभूति हैं। कवि डॉ. ऋषभ देव शर्मा द्वारा रचित प्रेम परक रचना "प्रेम बना रहे" दक्षिणी हिंदी साहित्य और तेलुगू हिंदी साहित्य की अमूल्य धरोहर है।

संदर्भ (References) -

Sharma, Rishabh Dev (2012). *Prem Ban Rahe (Kavya Sangrah)* [Making Love (Poetry Collection)]. New Delhi. Academic Pratibha Prakashan